एक औंकार सतिगुरू प्रसादि
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ।।
हक
हक
मेरे साहिब जी
शुद्ध रूहानी सतसंग
अवल अलह नूर उपाइआ - कुदरत के सभ बंदे । एक नूर ते सभ
जग उपजिआ - कउन भले को मंदे । लोगा भरम न भूलह भाई ।
खालिक खलक खलक मह खालिक - पूर रहिओ सब ठांई ।
Www.9009.co.in

"ऐक नूर"

1. अवल अलह नूर उपाइआ - कुदरत के सभ बदे । एक नूर ते सभ जग उपजिआ - कउन भले को मदे ।

अर्थः- सबसे पहले ख़ुदा का नूर ही है जिसने (जगत) पैदा किया है, यह सारे जीव-जंतु रब के ही बनाए हुए हैं । एक प्रभु की ही ज्योति से सारा जगत पैदा होया हुआ है । (तो फिर किसी जाति-मज़हब के भुलेखे में पड़ कर) किसी को अच्छा और किसी को बुरा ना समझो ।

लोगा भरम न भूलह भाई । खालिक खलक खलक मह खालिक – पूर रहिओ स्रब ठाईं ।

अर्थः- हे लोगो ! हे भाई ! (रब की हस्ती के बारे) किसी भूलेखे में पड़ कर दुखी मत होवो । वह रब सारी सृष्टि को पैदा करने वाला है और सारी सृष्टि में मौजूद है वह सब जगह भरपूर है ।

माटी एक अनेक भांत कर – साजी साजनहारै । ना कछु पोच माटी के भाडे – ना कछु पोच कुमभारै ।

अर्थः- विधाता ने एक ही मिट्टी से (भाव, एक जैसे तत्वों से) अनेक किस्मों के जीव-जन्तु पैदा कर दिए हैं । (जहाँ तक जीवों की अस्लियत का खरे होने का सम्बंध है) ना इन मिट्टी के बर्तनों (भाव, जीवों) में कोई कमी है, और ना (इन बर्तनों के बनाने वाले) कुम्हार में ।

सभ मह सचा एको सोई – तिस का कीआ सभ कछु होई । हुकम पछानै सु एको जानै – बंदा कहीऐ सोई ।

अर्थः- वह सदा कायम रहने वाला प्रभु सब जीवों में बसता है । जो कुछ जगत में हो रहा है, उसी का किया हुआ हो रहा है । वही मनुष्य रब का (प्यारा) बँदा कहा जा सकता है, जो उसकी रज़ा को पहचानता है और उस एक के साथ सांझ डालता है ।

अलह अलख न जाई लखिआ – गुर गुड़ दीना मीठा । कह कबीर मेरी संका नासी – सरब निरंजन डीठा । (1349)

अर्थः- वह रब ऐसा है जिसका मुकम्मल स्वरूप बयान से परे है, उसके गुण कहे नहीं जा सकते । कबीर कहता है: मेरे गुरु ने (प्रभु के गुणों की सूझ रूपी) मीठा गुड़ मुझे दिया है (जिसका स्वाद तो मैं नहीं बता सकता, पर) मैंने उस माया-रहित प्रभु को हर जगह देख लिया है, मुझे इस में कोई शक नहीं रहा (मेरा अंदर किसी जाति अथवा मज़हब के लोगों की उच्चता व नीचता का कर्म नहीं रहा) ।

शब्द का भाव: सर्व-व्यापक प्रभु ही सारे जीवों का विधाता है । सबकी अस्लियत एक ही है, किसी को बुरा मत कहो ।

2. जल थल महीअल - पूरिआ सुआमी सिरजनहार । अनिक भांत होइ - पसरिआ नानक एकंकार ।

अर्थः- सलोकु: हे नानक ! सारे जगत को पैदा करने वाला मालिक प्रभु जल में, धरती में और आकाश में भरपूर है, वह एक अकाल-पुरख अनेक ही तरीकों से (जगत में हर जगह) बिखरा हुआ है ।

एकम एकंकार प्रभ - करउ बंदना थिआइ । गुण गोबिंद गुपाल प्रभ - सरन परउ हरि राइ ।

अर्थः- (हे भाई !) मैं एक अकाल-पुरख प्रभु को स्मरण करके (उसके आगे ही) नमस्कार करता हूँ, मैं गोबिंद, गोपाल, प्रभु के गुण (गाता हूँ, और उस) प्रभु पातशाह की शरण पड़ता हूँ ।

ता की आस कलिआण सुख - जा ते सभ कछु होइ । चार कुंट दह दिस भ्रमिओ - तिस बिन अवर न कोइ ।

अर्थः- (हे भाई !) जिस मालिक प्रभु (के हुक्म) से ही (जगत में) सब कुछ हो रहा है, उसकी आस रखने से सारे सुख मिलते हैं । मैंने चारों कुंटों और दसों दिशाओं में घूम के देख लिया है उस (मालिक प्रभु) के बिना और कोई (रक्षक) नहीं है ।

बेद पुरान सिम्रित सुने - बहु बिध करउ बीचार । पतित उधारन भै हरन - सुख सागर निरंकार ।

अर्थः- (हे भाई !) वेद, पुराण, स्मृतियां (आदि धर्म-पुस्तकें) सुन के मैं (और भी) अनेक ढंग-तरीकों से विचार करता हूँ (और, इस नतीजे पर पहुँचता हूँ कि) आकार-रहित परमात्मा ही (विकारों में) गिरे हुए जीवों को (विकारों से) बचाने वाला है (जीवों के) सारे डर दूर करने वाला है और सुखों का समुंदर है ।

दाता भुगता देनहार - तिस बिन अवर न जाइ । जो चाहह सोई मिले - नानक हरि गुन गाइ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 296)

अर्थः- हे नानक ! (सदा) परमात्मा के गुण गाता रह, (उससे) जो कुछ तू चाहेगा वही मिल जाता है । वह परमात्मा ही सब दातें देने वाला है, (सब जीवों में व्यापक हो के सारे पदार्थ) भोगने वाला है, सब कुछ देने की समर्था वाला है, उसके बिना (जीवों के लिए) और कोई जगह-आसरा नहीं है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

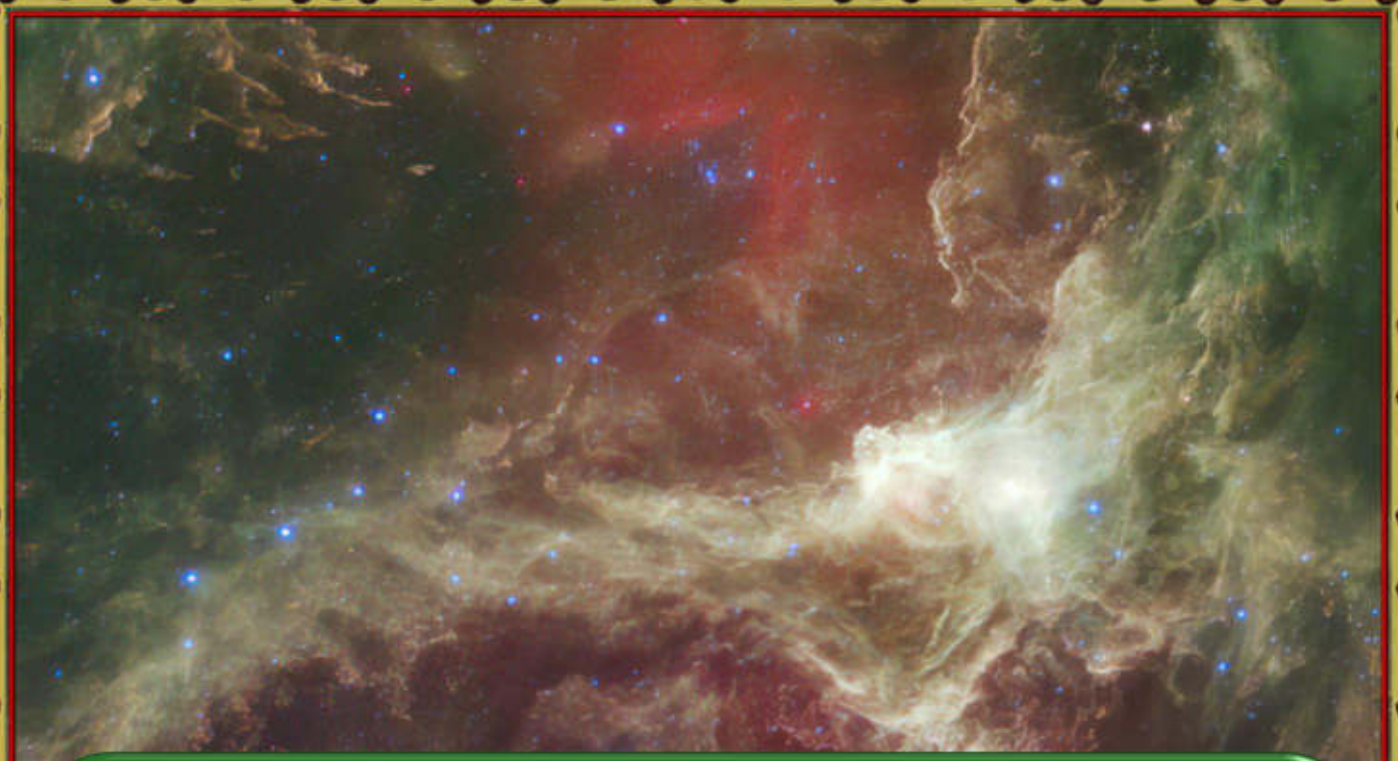

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"

एक औंकार सतिगुरू प्रसादि
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
तपः तपौं
हक
हक
नमौ नमः
मेरे साहिब जी
सतसंग
अवल अलह नूर उपाइआ - कुदरत के सभ बदे । एक नूर ते सभ
जग उपजिआ - कउन भले को मदे । लोगा भरम न भूलह भाई ।
खालिक खलक खलक मह खालिक - पूर रहिओ सब ठाई ।
Www.9009.co.in